Schol. म्रमेद्याः । मन्दाल्पाच मेद्यापा इत्यस् समासातः । Vgl. Pânini V. 4. 122.

Str. 354, 55. Calc. Ausg. B. D. कर्न। Vgl. Pânini VI. 4. 172. Str. 355, 57. Calc. Ausg. und D. सिरुसं°, B. सिरु: सं°, E. सिरु: सं°, die Scholien: सिरुसिरुननः।

Str. 356, 62. Calc. Ausg. und B. तत्रायत्तवशाधीनश्हन्द्वतः, die Scholien wie wir.

Str. 357, 63. Calc. Ausg. und B. D. श्रील, Schol. रूपितादिवाद्र-स्य लवे श्लील: । श्रीमानित्यपि। — 65. Calc. Ausg. und D. स्डी, Schol. स्डित स्म स्ड: । तत्र । — 66. Calc. Ausg. श्लीवृद्धि, B. E. श्लीवृद्धि°, die Scholien: स्रर्थनं स्टिड: ।

Str. 358, 67. Calc. Ausg. दुस्था।

Str. 361, 75. Schol. पराद्यश्चाचारः (°श्चाचारः) पृथगेकार्था इत्यन्ते । — 76. Calc. Ausg und D. भृतका, die Scholien wie wir.

Str. 362, 77. Calc. Ausg. und E. कर्मकर्ग । — 78. Calc. Ausg. निक्रिय:, die Scholien wie wir.

Str. 363, 82. Schol. संमार्जकनामी है।—। संमार्जको बङ्घान्यार्जक इत्यन्ये।

Str. 364, 86. Schol. तस्य भार्स्यालम्बनं तदालम्बः। यत्र रृज्ञः पञ्चरे (१. रृज्ञुप °) वेाह्य्यमास्ते। Man übersetze demnach: « das Netz von Stricken, in dem die Last liegt. » — 87. Die Scholien: भारोद्वाल्नार्यं चतुर्दण्डिका यष्टिर्भार्यष्टिः। शिक्याधारस्कन्धवाद्या लगुड इति द्विमिलः। विकंगप्रतिकृतिश्चर्मादिमयो विकंगिका। या भित्त्यदौ (sic) लम्बमाना स्था-प्यते प्रयाणके च संधार्यते। विकंगमित्येके।

Str. 368, 97. Calc. Ausg. নৱন, D. und E. নৱন, die Scholien wie wir.

Str. 370, 6. Calc. Ausg. und B. निस्द्रनं st. निस्तर्हणं, die Scholien wie wir.

Str. 372, 9. Calc. Ausg. und D. निकारण st. निष्कारण, die Scholien wie wir. — 10. Calc. Ausg. बर्डने । — 11. Schol. म्राततायी । वध उपलक्षणम् यत्स्मृतिः ।